बदलाव की हवा

वीणा शिवपुरी

दुर्गा जैसी हज़ारों लड़कियां हैं जो छोटे बड़े शहरों और कस्बों की झुग्गी बस्तियों में रहती हैं। घर में भाई बहनों को संभालती हैं। खाना पकाती हैं। मां के साथ बाहर काम पर भी जाती हैं। दुर्गा भी मां के साथ छः सात घरों में झाड़ू पोंछे का काम करती है।

नए शहर में आए तो नौरती ने हमारे यहां काम करना शुरू किया। दुर्गा उसी की बेटी है। करीब सोलह-सत्रह साल की दुबली-लम्बी लड़की। शाम को हमेशा दुर्गा ही काम करने आती थी। एक दिन मैंने पूछा:–

"दुर्गा, तू सुबह क्यों नहीं मां की मदद कराती। सुबह तो काम ज़्यादा होता है।"

"सुबह मैं "इंस्टीट्यूट" जाती हूं, मेमसाब" दुर्गा ने जवाब दिया।

इंस्टीट्यूट! मेरे कान खड़े हो गए।

"कौन-सा इंस्टीट्यूट?"

"पौलीटेक्निक इंस्टीट्यूट" वह बोली।

"अच्छा!" मैं चकित रह गई।

मैंने नौरती से इस बारे में पूछा, और इस तरह दुर्गा की कहानी सामने आई। नौरती और उसका पति घनश्याम राजस्थान के बहुत पिछड़े इलाके के एक गांव में रहते थे। दुर्गा उनकी सबसे बड़ी बेटी है। आखातीज आई। घर के बड़े बूढ़ों ने सारी पोतियों का एक साथ ब्याह करने की ठानी। छः महीने की दुर्गा का ब्याह भी हो गया। जब वह दो साल की बच्ची थी तभी उसका पांच साल का पति मर गया। नौरती की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। बेचारी दुर्गा का अब क्या होगा।

कुछ साल बाद गांव में अकाल पड़ा। खेती सूख गई। ढोर डंगर मरने लगे। लोग गांव छोड़-छोड़कर जाने लगे। नौरती और घनशयाम जयपुर चले आए। बड़े शहर में दोनों को काम मिल गया। एक दिन नौरती ने देखा चार साल की दुर्गा कोयले से जमीन पर कुछ लिख रही थी।

साभार–वर्क एण्ड इमप्रूवमेंट

"अरे, तूने यह कहां सीखा?" मां ने पूछा

"दीदी ने सिखाया" दुर्गा बोली

नौरती की बस्ती में एक छोटा सा स्कूल था। नौरती के काम पर जाने के बाद दुर्गा खेलते खेलते वहां चली जाती थी। वहीं उसने अक्षर लिखना सीख लिया था।नौरती ने दुर्गा को स्कूल में भर्ती करा दिया। दुर्गा पढ़ने में खूब तेज़ निकली। उसकी मास्टरनी भी खूब तारीफ़ करती। धीरे-धीरे दुर्गा पढ़ती चली गई।

"तो तुम लोग वापिस गांव नहीं गए" मैंने नौरती से पूछा।

"बुलावे तो बहुत आए पर दुर्गा का मुंह देख कर रुक गए।" नौरती ने बताया।

सच ही तो है। गांव जाकर दुर्गा की पढ़ाई छूट जाती। यहां दुर्गा की मास्टरनी ने नौरती और घनश्याम को समझाया।

"तुम लोग खुशकिस्मत हो जो ऐसी अकलमंद बेटी मिली है। अब इसकी पढ़ाई मत छुड़ाना।"

शहर की आबोहवा में नौरती और घनश्याम को यह बात समझ में आ गई। सोचा दुर्गा अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी तो ज़िन्दगी सुधर जाएगी। धीरे-धीरे दुर्गा ने अव्वल दर्जे में दसवीं पास कर ली। दुर्गा जहां-जहां काम करने जाती थी वे सब भी उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन अखबार में पौलीटैकनिक इंस्टीट्यूट का इश्तिहार निकला। दसवीं पास लड़के और लड़कियों को तरह-तरह की ट्रेनिंग दी जाती है। साथ में कुछ भत्ता भी मिलता है। पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित भी हैं। एक मेमसाहब के कहने पर दुर्गा ने फ़ार्म भर दिया। दो साल बाद दुर्गा टेलीविजन ठीक करने वाली मिस्त्री बन जाएगी। चाहे अपनी दुकान खोले, चाहे कहीं नौकरी कर ले।

अब नौरती को दुर्गा पर बहुत गर्व है। कहती है "मेरी दुर्गा बहुत सयानी है मेमसाब। दसवीं पास छोरा होता तो अपने को लाटसाब समझता। छोरी तो मेरी खूब मदद करती है।"

"पढ़ाई लिखाई तो ठीक है, नौरती। अगर बड़ी होकर दुर्गा शादी करना चाहे तो?" मैंने धीरे से पूछा।

"तो क्या मेमसाब। उसका बाप जरूर गुस्सा करेगा। पर मैं तो उसका साथ दूंगी।"

नौरती की बात सुनकर मेरा मन खिल गया। लगा कहीं न कहीं बदलाव तो आ रहा है। □